हवे तो सर्वे में सोंप्यूं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई।
कहे इन्द्रावती मुझ विना, तूंने एम वस न करे बीजो कोई।। ४ ।।

और जब मैंने मूल परमधाम की निसबत जानकर अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे वालाजी! मेरे बिना दूसरा कोई भी आपको इस तरह से वश में नहीं कर सकता।

॥ प्रकरण ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ ४८० ॥

म्हारा वस कीधल वाला रे, अमथी अलगा केम करी थासो।
हूं तो एवी नहीं रे सोहाली, जे वचनिऐं वहासो।। १ ।।

हे मेरे वश में आए हुए वालाजी! आप मेरे से अलग कैसे होंगे? मैं इतनी भोली नहीं हूं कि आप मुझे अपने वचनों से बहका दोगे।

ए तो नहीं अटकलनी ओलखांण, जे ततखिण रंग पलटाओ।
सनमंधीनों रंग नेहेचल साचो, जिहां हूं तिहां तमें आवो।। २ ।।

यह अटकल की पहचान नहीं है कि जो आप तुरन्त भूल जाओ। मेरी आपकी अखण्ड निसबत का प्रेम है, इसलिए जहां मैं हूं वहां आप आओ।

हवे अधखिण एक न मूकूं अलगा, प्रीत पेहेलानी ओलखाणी।
साची सगाई कीधी प्रगट, सचराचर संभलाणी।। ३ ।।

अब मैं आपको आधे क्षण के लिए भी नहीं छोडूंगी, क्योंकि मुझे मूल घर के प्रेम की पहचान हो गई है। हमारे बीच धनी धन्यानी (स्वामिनी) का नाता है। यह यहां चर-अचर सभी ने जान लिया है।

प्रेम विनोद विलास माया मांहें, सुफल फेरो एम कीजे।
अखण्ड आनंद सदा इंद्रावती घरे, पूरण सुख लाहो लीजे।। ४ ।।

अब माया में आकर प्रेम से विनोद और विलास करो ताकि यहां आना सफल हो जाए और पूर्ण सुख का लाभ मिल जाए। वैसे घर (परमधाम) में तो सदा ही अखण्ड आनन्द है।

॥ प्रकरण ॥ ४४ ॥ चौपाई ॥ ४८४ ॥

राग श्री काफी

आवोजी वाला म्हारे घेर, आवो जी वाला।
एकलडी परदेसमां, मूने मूकीने कां चाल्या।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! मेरे घर (हृदय में) आइए। परदेश (विदेश) में मुझे अकेली छोड़कर आप कहां चले गए?

मूने हती नींदरडी, तमे सूती मूकी कां राते।
जागी जोऊं तां पिउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते।। २ ।।

मुझे इस माया के संसार में अज्ञानता की नींद थी। आप मुझ सोती को छोड़कर कहां चले गए? होश में आकर देखा तो धनी पास में नहीं दिखाई पड़े। रात बीतने पर तो सवेरा हो जाएगा, अर्थात् जीवन रूपी रात बीतने पर परमधाम में जग जाएंगे।

Nijanand App

कलकली ने कहूं छूं तमनें, आवजो आणे खिणे।
म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इंद्रावती लागे चरणें।। ३ ।।

हे वालाजी! मैं बिलख-बिलखकर कहती हूं कि इस समय में आप आ ही जाओ। इन्द्रावती आपके चरणों में विनती करती है कि आकर मेरी चाहना पूरी कर दो।

॥ प्रकरण ॥ ४५ ॥ चौपाई ॥ ४८७ ॥

प्रीत प्रगट केम कीजिए, कीजिए तो छानी छिपाए, मेरे पिउ जी।
तूं तो निलज नंदनो कुमार, मेरे पिउ जी।। १ ।।

महामतिजी कहते हैं, हे प्रीतम! प्रेम जाहिर नहीं किया जाता। उसका आनन्द तो छिपकर ही लिया जाता है। हे नन्द कुमार। मेरे पिया! तुम बेशर्म हो।

तूं देख भयो मोहे बावरो, मैं कुलवधुआ नार।
तूं रोक रह्यो मोहे राह में, घड़ी भई दोए चार।। २ ।।

तुम मुझे देखते ही बावरे हो जाते हो। मैं एक कुलीन (कुलवन्ती) नारी हूं। तुम मुझे कितनी देर तक रास्ते में रोककर खड़े हो जाते हो।

गलियन में दुरजन देखे, तोमें नहीं विचार।
तूं कामी कछू ना देखही, पर सासुड़ी दे मोहे गार।। ३ ।।

मार्ग में बैठे सांसारिक लोग देख रहे हैं उनकी मुझे कोई परवाह नहीं, तुम प्यार में पागल होकर मुझे मेरा सम्बन्ध याद दिलाना चाहते हो। मुझे अपने सास ससुर का ख्याल आता है।

कर जोरे कुच मरोरे, अंगिया नखन विडार।
अधुर न छोड़े दंत सों, करेगो कहा अब रार।। ४ ।।

तुमने मेरी अंगिया रूपी आत्मा को हाथों और मुख से स्पर्श करते हुए मेरे चारों अन्तस्करण रूपी दो हाथ और दो स्तनों को झकझोर दिया और मुझे तुम्हारी अंगना होने का एहसास होने लगा।

तूं बालक नेह न बूझहीं, मैं बरज्यो केतीक वार।
मैं मेरो कियो पाइयो, अब कासों करों पुकार।। ५ ।।

मेरे अन्तस्करण कहने लगे तुम तो एक बालक हो और सांसारिक स्नेह-प्यार नहीं जानते, इसलिए मैं तुम्हें बार-बार रोक रही हूं, परन्तु आत्मा का पूर्व सम्बन्ध याद आया और प्रेम की दुहाई देने की आवश्यकता नहीं समझी।

सारी फारी कंठसर टोरी, टोरयो नवसर हार।
अब घर कैसे जाइए, उलटाए दियो सिनगार।। ६ ।।

आपने मेरे साड़ी रूपी शरीर को नया रूप दे दिया। सतलोक बैकुण्ठ के सम्बन्ध को तोड़ा और नवधा भक्ति रूपी हार को तोड़ कर प्रेम लक्षणा का मार्ग दिया। अब संसार रूपी घर में वापस कैसे जाएं आपने तो मेरी वेश भूषा ही बदल दी है।

अब मिल रही महामती, पिउ सों अंगों अंग।
अछरातीत घर अपने, ले चले हैं संग।। ७ ।।

अब महामतिजी कहती हैं कि इस तरह से मैं अपने धनी से एकाकार हो गई। धनी अपने साथ लेकर मूल घर (अक्षरातीत धाम) चलते हैं।

॥ प्रकरण ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ ४९४ ॥

Nijanand App